अध्याय 2

यरूशलेम की शहरपनाह के पुनर्निर्माण के लिए नहेम्याह की वापसी

विचलित करने वाली खबर कि यहूदी लोग "बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निन्दा होती है" और यरूशलेम की "शहरपनाह टूटी हुई है" और उसके फाटक "जले हुए हैं," सुनने के पश्चात, नहेम्याह विलाप, उपवास और प्रार्थना करने लगा (1:3-11)। फिर भी, अध्याय 2 के अनुसार वह प्रार्थना करने के बाद शांत नहीं बैठा; बल्कि उसकी प्रार्थना का अनुपूरक उसका कार्य था। उसने अपना दुःख राजा अर्तक्षत्र पर प्रकट किया। तब, उसने राजा के प्रश्न के प्रत्युत्तर में यरूशलेम जाने और नगर की शहरपनाह का पुनर्निर्माण करने की अनुमति मांगी। राजा ने उसकी विनती को स्वीकार किया।

फारस के राजा की चिट्ठी और सेना की सुरक्षा में नहेम्याह, यहूदा की ओर निकल पड़ा। वहाँ पहुँचने के पश्चात, उसने चुपचाप शहरपनाह का निरीक्षण किया और सार्वजनिक रूप से लोगों से इस समस्या का समाधान करने के लिए आग्रह किया। उन्होंने उसकी चुनौती को "आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें" (2:18), कहकर स्वीकार किया; लेकिन उनको इस परियोजना के आरंभ से ही शत्रुओं के विरोध का सामना करना पड़ा। अध्याय 2, तीन पुरुषोंः सम्बल्लत, तोबियाह और गेशेम की पहचान करता है जिन्होंने निरंतर यहूदियों के प्रयास का विरोध किया।

शहरपनाह पुनर्निर्माण की अनुमति (2:1-8)

[1]अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नामक महीने में, जब उसके सामने दाखमधु था, तब मैं ने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इस से पहले मैं उसके सामने कभी उदास न हुआ था। [2]तब राजा ने मुझ से पूछा, "तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुँह क्यों उतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी।" तब मैं अत्यन्त डर गया। [3]मैं ने राजा से कहा, "राजा सदा जीवित रहे! जब वह नगर जिसमें मेरे पुरखाओं की कबरें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुँह क्यों न उतरे?" [4]राजा ने मुझ से पूछा, "फिर तू क्या माँगता है?" तब मैं ने

स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करके राजा से कहा, 5"यदि राजा को भाए, और तू अपने दास से प्रसन्न हो, तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओं की कबरों के नगर को भेज, ताकि मैं उसे बनाऊँ।" 6तब राजा ने जिसके पास रानी भी बैठी थी, मुझ से पूछा, "तू कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लौटेगा?" अत: राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ; और मैं ने उसके लिये एक समय नियुक्त किया। 7फिर मैं ने राजा से कहा, "यदि राजा को भाए, तो महानद के पार के अधिपतियों के लिये इस आशय की चिट्ठियाँ मुझे दी जाएँ कि जब तक मैं यहूदा को न पहुँचूँ, तब तक वे मुझे अपने अपने देश में से होकर जाने दें; 8और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के लिये भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिये, और शहरपनाह के और उस घर के लिये, जिसमें मैं जाकर रहूँगा, लकड़ी दे।" मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर थी, इसलिये राजा ने यह विनती स्वीकार कर ली।

आयत 1. जब नहेम्याह की भेंट राजा से हुई तो उसने लिखाः **अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नामक महीने में।**[1] नीसान (मार्च/अप्रैल) फारसी कैलेंडर और यहूदी धार्मिक कैलेंडर का पहला महीना था; किसलेव (नवंबर/दिसंबर) नौवां महीना था। जब इस अनुच्छेद की तुलना 1:1 से की जाती है तो यह थोड़ा पेचीदा जान पड़ता है, जिसमें यह कहा गया है कि नहेम्याह को यरूशलेम की शहरपनाह टूटी होने की खबर "बीसवें वर्ष के किसलेव नामक महीने में" पहुँची। किस प्रकार नहेम्याह उस खबर के संबंध में पहले महीने में राजा से मिल सकता था, जो उसे नौवें महीने में मिला था? इस प्रश्न के कई समाधान प्रस्तुत किए गए हैं। (1) लिपिकीय त्रुटि की संभावना हो सकती है, और 1:1 को "उन्नीसवें वर्ष" पढ़ा जाना चाहिए। (2) इसकी भी संभावना है कि संभवतः नहेम्याह सार्वजनिक यहूदी कैलेंडर प्रयोग कर रहा था। इस क्रम में, वर्ष का आरंभ तीसरी (सितम्बर/अक्तूबर) के महीने, जो पतझड़ का मौसम है, और किसलेव का महीना जो दो महीने पश्चात आता है, आने वाले बसंत ऋतु में नीसान से पहले आता है।[2] (3) यह भी संभव है कि नहेम्याह अर्तक्षत्र के शासकीय वर्ष की गिनती कर रहा था, जो कैलेंडर के प्रथम महीने से नहीं बल्कि उसके सत्तारूढ़ होने से गणना की जा रही थी, जो किसलेव और नीसान महीने के बीच हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में, नीसान का महीना, अर्तक्षत्र के शासनकाल के "बीसवें वर्ष में" किसलेव की महीना से पहले हो सकता है। आखिरकार, पाठ यह नहीं बताता है कि नीसान का महीना अर्तक्षत्र के शासन का प्रथम महीना था।[3]

ध्यान देने वाला सबसे महत्वपूर्ण काल कारक यह है कि नहेम्याह ने राजा के सम्मुख अपनी विनती रखने से पहले लगभग चार महीने (दिसंबर से अप्रैल तक) विलाप और प्रार्थना करने (और संभवतः योजना बनाने) में बिताया होगा। इतना विलंब करने का क्या कारण हो सकता है? हो सकता है कि इस समय काल में अर्तक्षत्र व्यापार के लिए दूर देश गए हों जिस कारण नहेम्याह को राजा से मिलने में विलंब हुआ होगा। सबसे संभावित बात यह है कि नहेम्याह तब तक राजा से

नहीं मिलना चाहता था जब तक कि उसको यह विश्वास न हुआ कि परमेश्वर ने उसकी योजनाओं का समर्थन किया है और राजा उसकी विनती को स्वीकृत करेगा।

नहेम्याह "राजा का पियाऊ" (1:11) था, जो **राजा** को **दाखमधु** परोसता था। अवसर अज्ञात है; यह राजभोज का अवसर हो सकता है या फिर राजा और रानी का निजि भोजन (उनके कुछ निजि मित्रों के साथ) का अवसर हो सकता है। कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि चूँकि यह अवसर वर्ष का प्रथम महीना नीसान है, तो नये वर्ष का उत्सव मनाने के लिए भोज का आयोजन किया गया था और नहेम्याह ने जानबूझकर इस अवसर का चयन किया क्योंकि परंपरा के अनुसार ऐसे भोज के अवसर पर राजा के सम्मुख रखे गए निवेदन को वह स्वीकृत करता था। हेरोडोटस ने फारसी राजा की परंपरा के बारे में वर्णन किया है जिसमें हर वर्ष भोज के दौरान उदारता दिखाई जाती थी।[4] एच. जी. एम. विलियमसन के अनुसार, "भोज 'राजा के जन्मदिन का उत्सव' मनाने के लिए आयोजन किया गया था, लेकिन यह असंभव नहीं है कि इसका आयोजन नव वर्ष के आरंभ में किया जाता था, या इसी प्रकार का आयोजन अन्य अवसरों पर भी किया जाता था।"[5]

आयत 2. उस दिन, **राजा** को नहेम्याह के चेहरे में कुछ परिवर्तन दिखाई दिया। वह **उदास** था - जो राजा ने इससे पहले उसके चेहरे में नहीं देखा था। कम से कम यह कहना, कि राजा के सेवक को जब वह महाराज की उपस्थिति में होता है तो उसको अपनी भावनाएं प्रकट करने की अनुमति नहीं था। यह पियाऊ का कर्तव्य था कि वह अपने साथी के लिए सौहार्दपूर्ण परिस्थिति उत्पन्न करे ताकि वह अपने स्वामी के दिन को आनंदमय बना सके। यदि ऐसा है तो इससे पहले नहेम्याह कभी अपना कर्तव्य पूरा करने में नहीं चूका था।

जब राजा ने पियाऊ से उसकी उदासी का कारण पूछा, तो नहेम्याह डर गया, संभवतः अच्छे कार्य के लिए। प्राचीन काल में राजा अक्सर मनमौजी होते थे; राजा को अप्रसन्न करने का तात्पर्य, विनाश को निमंत्रण देने जैसा था।[6] नहेम्याह जानता था कि जो निवेदन वह राजा से करने वाला था उससे वह क्रोधित हो सकता था। वह राजा से यरूशलेम और यहूदियों के प्रति अपनी नीति बदलने को कहने वाला था। यह वही राजा, अर्तक्षत्र प्रथम था, जिसने कुछ समय पहले ही यहूदियों को नगर और उसकी शहरपनाह का पुनर्निर्माण न करने का आदेश दिया था (एज्रा 4:21)। परिणामस्वरूप, यहूदियों के शत्रुओं ने "बलपूर्वक" कार्य को रोक दिया था (एज्रा 4:23)। नहेम्याह जानता था कि राजा ने जो आदेश पहले जारी किया था उसको बलदने में वह अनाकानी करेगा। आमतौर पर, फारसी राजा का आज्ञापत्र नहीं बदला जा सकता था (एस्तेर 1:19; 8:8; दानिय्येल 6:8, 12, 15); फिर भी, एज्रा 4:21 की भाषा में यह पाया जाता है कि राजा ने इस मामले में एक कमी छोड़ी थी: "इसलिये अब इस आज्ञा का प्रचार कर कि वे मनुष्य रोके जाएँ और *जब तक मेरी ओर से आज्ञा न मिले*, तब तक वह नगर बनाया न जाए" (बल दिया गया है)।

आयत 3. नहेम्याह ने आदरपूर्वक उत्तर दिया, **"राजा सदा जीवित रहे"** (देखें 1 राजा. 1:31; दानिय्येल 2:4; 3:9; 5:10; 6:6, 21)। तब उसने **राजा** को

ईमानदारी से बताया कि वह उस खबर को सुनकर उदास है कि वह **नगर** जिसमें उसके पुरखाओं की कब्रें हैं, **उजाड़ पड़ा** है और उसके **फाटक जले हुए** हैं। उसने केवल उस नगर के बारे में कहा जहाँ उसके पुरखाओं के कब्र थे,[7] जो निवेदन को व्यक्तिगत बनाता है।

नहेम्याह को इस बात का विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं थी कि किसी नगर की शहरपनाह का टूटना नगर को "उजाड़" क्यों बनाता है; सभी को पता था कि ऐसे नगरों को आक्रमणकारी आसानी से घेर लेते थे। इसके साथ ही, किसी भी नगर की टूटी शहरपनाह वहाँ के निवासियों व उनके देवताओं के लिए कलंक था। कोई भी यह कल्पना कर सकता है कि नहेम्याह का श्वास उसके विश्लेषण के प्रति राजा के प्रत्युत्तर तक रुका रहा। उसका भविष्य और यरूशलेम का भविष्य, इस बात पर निर्भर करता था कि राजा नहेम्याह के शब्दों के प्रति कैसे प्रत्युत्तर दिखाता है।

आयत 4. अर्तक्षत्र का प्रत्युत्तर सामान्य था। उसने अपने सेवक को दोषी नहीं ठहराया, और न ही उसने उसकी सहायता करने की अपनी इच्छा तुरंत प्रकट की। उसने केवल यह पूछा, **"फिर तू क्या माँगता है?"** वास्तव में उसने कहा, "तू क्या चाहता है कि मैं इस बारे में करूँ?" जिस तरह नहेम्याह ने राजा के प्रश्न के प्रति प्रतिक्रिया दिखाई वह परिस्थिति के प्रति उसकी उत्सुकता व उसका महान विश्वास दर्शाता है: उसने **स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना** किया। वह चार महीने से प्रार्थना कर रहा था। संकट की इस घड़ी में, जिसे वह जानता था कि वह नियंत्रण में है, उसकी ओर ताकने लगा।

आयत 5. नहेम्याह ने **राजा** से कहा कि वह **उसे यहूदा**, वह स्थान जहाँ उसके पुरखाओं के कब्र हैं - अर्थात् यरूशलेम को **भेज दे** - ताकि वह उसका **पुनर्निर्माण** कर सके। दूसरे शब्दों में, **नगर** की शहरपनाह बनाकर फिर से वह उसको सुरक्षित कर सके। फिर, निवेदन करके नहेम्याह ने राजा का प्रत्युत्तर सुनने के लिए दुविधापूर्वक प्रतीक्षा की होगी।

आयत 6. दृश्य के चर्मोत्कर्ष तब पहुँचा जब **राजा** ने यह कहकर प्रत्युत्तर दिया, **"तू कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लौटेगा?"** यह सुनकर नहेम्याह ने चैन की सांस ली होगी! जिसके लिए उसने प्रार्थना की थी और जो योजना उसने बनाई थी और जो उसने करने की ठानी थी, उसके लिए अब उसको राजा की अनुमति मिल गई थी। नहेम्याह ने परमेश्वर से यह विनती की कि वह "आज उसको सफल बनाए" (1:11)। ऐसा प्रतीत होता है कि उस दिन जो कुछ हुआ नहेम्याह ने ठीक वैसा ही चाहा था। स्पष्ट रूप से, उसने अपने दुःख को चार महीने तक सीने में दबाये रखा, लेकिन उसने एक विशेष दिन में उसे राजा पर प्रकट किया। इस प्रकार की योजना जोखिम भरी होती है, लेकिन परमेश्वर की आशीष के द्वारा यह संभव हुआ।

इसके पश्चात् नहेम्याह ने यह लिखा कि **राजा** उसे **भेजने के लिए** सहमत हुआ और उसने राजा के प्रश्न का उत्तर एक **निश्चित् तिथि** देकर दिया, यद्यपि उसने उस तिथि के बारे में इस पाठ में कुछ नहीं लिखा। नहेम्याह ने कहा कि "मैं यहूदा

देश में उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष से ले उसके बत्तीसवें वर्ष तक," स्पष्ट रूप से उसने बारह वर्ष तक इस भूमिका में सेवा की (5:14)। यद्यपि, ऐसा लगता है कि उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि काम समाप्त करके वह एक या दो वर्ष में लौट आएगा।

वाक्यांश **जिसके पास रानी भी बैठी थी**, ने एक प्रश्न उठाया "यहाँ नहेम्याह ने यह सूचना क्यों जोड़ी?" संभवतः रानी की उपस्थिति का वर्णन यह दर्शाता है कि नहेम्याह ने विनती किसी निजी समारोह में की होगी। क्योंकि आमतौर पर रानी सार्वजनिक समारोह में उपस्थित नहीं रहतीं थीं। एक और विचारधारा यह है कि नहेम्याह ने दो घटनाओं का एक साथ समावेश किया थाः एक सार्वजनिक समारोह था जहाँ राजा सैद्धांतिक रूप से नहेम्याह के निवेदन से सहमत हुए थे और दूसरा निजि समारोह जहाँ इसके विस्तृत विवरण पर कार्य किया गया होगा। यद्यपि, रानी की उपस्थिति महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने नहेम्याह की ओर से (चाहे सार्वजनिक या निजि समारोह हो) राजा को प्रभावित किया होगा। यह कि नहेम्याह को रानी की उपस्थिति में आने दिया गया था इससे यह प्रमाणित नहीं होता है कि नहेम्याह एक नपुंसक था।

आयतें 7, 8. यरूशलेम जाने की अनुमति मिलने के बाद, नहेम्याह ने दो और विनती मांगी। उसने **महानद के पार के अधिपतियों** के लिये इस आशय की चिट्ठियाँ मांगी कि जब तक वह यहूदा को न पहुँचे, तब तक वे उसे अपने अपने देश में से होकर जाने दें। यह इस बात को प्रमाणित करेगा कि उसे अर्तक्षत्र की सहमति प्राप्त है। उसने **सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के लिये भी इस आशय की चिट्ठी** मांगी कि उसे उसके निर्माण से संबंधित आवश्यक लकड़ी दी जाए। कुछ लोगों का यह मानना है कि यह जंगल लबानोन में था, चूँकि **यहूदा** की पिछली परियोजना के लिए "लबानोन की देवादारू" (1 राजा. 5:6; NIV) यहीं से उपलब्ध कराई गई थी (एज्रा 3:7 की टिप्पणी देखें)। यद्यपि यह तथ्य कि कार्य दो महीने में पूरा हो गया था यह इंगित करता है कि सरकारी जंगल यरूशलेम से अधिक दूर नहीं था (देखें 8:15)। इस जंगल का यहूदा के क्षेत्र में होने का समर्थन इस तथ्य से भी किया जा सकता है कि सरकारी जंगल का रखवाला आसाप एक इब्रानी नाम है।

नहेम्याह को लकड़ी तीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चाहिए थी। आरंभ में उसे भवन से लगे राजगढ़ के किले के लिए फाटक बनाना था जहाँ से मंदिर दिखाई देता था। यह राजगढ़, जिसका वर्णन 7:2 में भी किया गया है, मंदिर की चोटी की पहाड़ी के उत्तर-पश्चिम सिरे पर स्थित था। इंटरटेस्टामेंटल काल में हासमोनियों ने किले की "शहरपनाह को दृढ़ किया था"[8] और कालांतर में हेरोदेस महान ने इसे अन्तोनिया की किले में परिवर्तित किया था।[9] इसे प्रेरितों के काम 21:37; 22:24 में "गढ़" कहा गया है। आगे, वह **नगर की शहरपनाह** का पुनर्निर्माण करना चाहता था। शहरपनाह पत्थर से बनाया गया होगा लेकिन फाटक बनाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता हुई होगी। इनको "आग से जलाया" गया था (1:3; 2:3)। इसके साथ ही, वह अपना भी **घर** बनाना चाहता था। अधिपति के रूप में नहेम्याह को

एक घर की भी आवश्यकता थी - केवल निवास के लिए ही नहीं बल्कि उसे एक स्थान चाहिए था, जहाँ से वह अपना दैनिक कार्य निपटा सके।

नहेम्याह ने अपना लेख अर्तक्षत्र के साथ वार्तालाप के साथ समाप्त किया कि **राजा** ने उन बातों को करने की उसे अनुमति दे दी थी, जिनके लिए उसने निवेदन किया था। उसने अपनी सफलता का श्रेय यहोवा को दिया। अभी तक जो कुछ उसने किया था, वह इसलिए कर पाया क्योंकि उसके **परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर थी**। अर्तक्षत्र उसे भेजने के लिए इसलिए सहमत हुआ होगा क्योंकि यह उसके लाभ के लिए था। चूँकि इस क्षेत्र के अन्य लोगों ने फारसी राजा से विद्रोह किया था, तो उसने सोचा होगा कि नहेम्याह पर कृपादृष्टि प्रकट कर वह इस क्षेत्र के यहूदियों को, जो विद्रोह और अस्थिरता के लिए जाने जाते थे, अपना सहयोगी बना लेगा। अर्तक्षत्र ने जो भी सोचा हो, नहेम्याह इस बात से अनभिज्ञ नहीं था कि परमेश्वर अभी भी नियंत्रण में है! यदि फारस के महान राजा ने उस पर कृपादृष्टि दिखाई है तो यह इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऐसा करने के लिए विवश किया था।

नहेम्याह का यहूदा की ओर यात्रा (2:9, 10)

9तब मैं ने महानद के पार के अधिपतियों के पास जाकर उन्हें राजा की चिट्ठियाँ दीं। राजा ने मेरे संग सेनापति और सवार भी भेजे थे। 10यह सुनकर कि एक मनुष्य इस्राएलियों के कल्याण का उपाय करने को आया है, होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था, उन दोनों को बहुत बुरा लगा।

आयत 9. अर्तक्षत्र की आशीर्वाद के साथ, नहेम्याह शूशन से यरूशलेम के लिए निकल गया। उसके यात्रा का विवरण - एक हजार मील से अधिक की दूरी, जिसे तय करने में महीनों लग सकता था - का विवरण, पूर्वकालिक जरूबाब्बेल और एज्रा की यात्रा के समान, नहीं किया गया है (देखें एज्रा 2:1; 7:6-8; 8:31, 32)। पाठ यह कहता है कि नहेम्याह **महानद के पार के अधिपतियों के पास गया** और उसने उन्हें **राजा की चिट्ठियाँ** दी। चूँकि अर्तक्षत्र ने उसके मिशन को स्वीकृति दी थी, इसलिए उन्होंने उसे आगे बढ़ने से नहीं रोका। नहेम्याह ने यह भी बताया कि राजा ने उसे उसकी सुरक्षा के लिए सैन्य शक्ति प्रदान किया था जिसमें **सेनापति और सवार** भी थे।[10] आधिकारिक चिट्ठी और सैन्य अनुरक्षक नहेम्याह की अधिकार को दर्शाता है और इस बात पर जोर देता है कि वह फारसी राजा की ओर से आया है और पूरा साम्राज्य उसके साथ है।[11]

आयत 10. नहेम्याह ने इस कहानी के खलनायकों का परिचय दिया हैः **होरोनी सम्बल्लत** और **तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था**। इस कहानी में इन दोनों व्यक्तियों का नाम (और एक तीसरे व्यक्ति, जिसका वर्णन 2:19 में किया गया है) कई बार लिखा गया है, जिनको सदैव यहूदियों के शत्रु के रूप में

वर्णित किया गया है (2:10, 19; 4:1, 7, 8; 6:1, 2, 5, 12, 14; 13:28)।

अतिरिक्त बाइबल स्रोत के माध्यम से पता चलता है कि सम्बल्लत सामरिया का अधिपति था,[12] यद्यपि इस पुस्तक में उसके बारे में ऐसा वर्णन नहीं किया गया है। कुछ लोगों का विचार है कि उसका "होरोनी" उपाधि यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि वह कनानियों के देवता "होरोन" की पूजा पाठ किया करता था, लेकिन इसके बजाय संभवतः वह "होरोनी" इसलिए कहलाता था क्योंकि वह "बेथ-होरोन" का निवासी था, जो यरूशलेम से लगभग बारह मील की दूरी पर उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित था।[13] जेकब एम. मेयर्स के अनुसार सम्बल्लत "अश्शूर की विजय के पश्चात, एक मिश्रित झुण्ड जो सामरिया में बस गया था, का वंशज था [2 राजा. 17:24, 29-31]।" इसके साथ ही उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि सम्बल्लत यहोवा की उपासना किया करता था क्योंकि उसके पुत्रों के नाम के अंत में "याह[वेह]" पाया जाता है। फिर भी, सम्बल्लत निश्चित रूप से यहोवावादी नहीं था जिसका प्रमाण यरूशलेम के अगुओं द्वारा उसका प्रतिकार है।"[14]

यद्यपि तोबियाह को "अम्मोनी कर्मचारी" संबोधित किया गया है, और जिसके नाम का अर्थ "यहोवा भला है," एक यहूदी हो सकता है।[15] "अमोनी" का अर्थ यह हो सकता है कि तोबियाह का पालन-पोषण यहूदा की पूर्व दिशा की ओर स्थित अम्मोन में हुआ होगा। "कर्मचारी" (עֶבֶד, *'एबेद)* शब्द का शाब्दिक अर्थ "सेवक" है। संभवतः फारसी साम्राज्य की अम्मोन में उसको सरकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया होगा, हो सकता है कि वह वहाँ का अधिपति भी रहा होगा।[16] किसी भी दशा में, उसका सम्बल्लत से निकटतम संबंध था।

नहेम्याह 2:19 में वर्णित "गेशेम नामक एक अरबी," बाइबल के अलावा अन्य स्रोतों के अनुसार, अरबी जाति या अरबी जाति समूह का अगुवा रहा होगा, जो केदार, यहूदा के दक्षिण-पूर्व उत्तरी अरब में रहते थे। उसका प्रभाव स्पष्ट रूप से केदार के पश्चिम से दक्षिणी यहूदा और सीनै से मिस्र उपद्वीप तक फैला था।[17]

यह कि किसी को फारस की राजा का यहूदा आकर **इस्राएलियों** की सहायता करने का आज्ञा पत्र मिला था, सुनकर सम्बल्लत और तोबियाह को अच्छा नहीं लगा। क्यों? यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहूदियों की स्थिति सुधरने पर उनको आर्थिक और राजनैतिक नुकसान हो सकता था। चूँकि नहेम्याह को यहूदा का अधिपति नियुक्त किया गया था तो अब उनका यहूदा पर नियंत्रण नहीं था। इसके साथ ही वे निश्चित रूप से यहूदियों के कारण (संभवतः कर, सीमा शुल्क व चुंगी इत्यादि लगाकर) सम्पन्न हो रहे थे। यथा स्थिति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन उनके लाभ एंव अधिकार हनन हो सकता था।

यरूशलेम की दीवार पर नहेम्याह के कार्य का आरंभ (2:11-20)

नहेम्याह द्वारा यरूशलेम की दीवार का निरीक्षण (2:11-15)

[11]जब मैं यरूशलेम पहुँच गया, तब वहाँ तीन दिन रहा। [12]तब मैं थोड़े पुरुषों

को लेकर रात को उठा; मैं ने किसी को नहीं बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिये मेरे मन में क्या उपजाया था। अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था। 13मैं रात को तराई के फाटक में होकर निकला और अजगर के सोते की ओर, और कूड़ाफाटक के पास गया, और यरूशलेम की टूटी पड़ी हुई शहरपनाह और जले फाटकों को देखा। 14तब मैं आगे बढ़कर सोते के फाटक और राजा के कुण्ड के पास गया; परन्तु मेरी सवारी के पशु के लिये आगे जाने को स्थान न था। 15तब मैं रात ही रात नाले से होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ़ गया; फिर घूमकर तराई के फाटक से भीतर आया, और इस प्रकार लौट आया।

आयत 11. नहेम्याह ने हज़ार मील से अधिक की अपनी यात्रा संपन्न करने के पश्चात अपने आगमन को दर्ज किया। उसने कहा **मैं यरूशलेम पहुँच गया** और आगे उसमें जोड़ा कि **वहाँ तीन दिन रहा**, बिना यह बताए कि उस समय में उसने क्या किया। क्योंकि एज्रा के बाबुल से लौट कर आने में यही वर्णन दर्ज किया गया है (एज्रा 8:32), इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि "तीन दिन" इतनी लंबी और कठिन यात्रा के बाद आवश्यक विश्राम के लिए उपयुक्त समय था।

आयत 12. नहेम्याह ने यरूशलेम की टूटी हुई शहरपनाह का उसके द्वारा रात में किए गए निरीक्षण का वर्णन किया। उसने यह स्पष्ट किया कि वह **रात को** गया (संभवतः जब वह चांदनी में देख पाता) शहर के लोगों से अपने उद्देश्य को छिपाए रखने के लिए। इस समय तक उसने उन्हें यह नहीं बताया था कि वह क्या करने आया था। उसकी योजनाओं को औरों को बताने में विलम्ब करने के किसी कारण को स्पष्ट नहीं किया गया है। संभव है कि वह किसी को कुछ बताने से पहले टूटी हुई दीवार के विषय जो उसने सुना था उसकी पुष्टि करना चाहता था। हो सकता है कि वह चाहता हो कि जो काम किया जाना है पहले उसका आकलन कर लिया जाए तब ही उससे संबंधित योजना प्रस्तावित की जाए। यह भी हो सकता है कि उसने अपने कार्य को गुप्त रखना चाहा हो जिससे उसके शत्रु पहले से ही उसकी प्रस्तावित योजना के बारे में जान न लें। यदि वे जान जाते तो और अधिक प्रभावी रीति से उसकी योजनाओं में बाधाएं डालते। एफ. चार्ल्स फेनशम ने इस अंतिम संभावना का पक्ष लिया, इस तर्क के साथ कि नहेम्याह के शत्रुओं को "जो योजना वह बना रहा था उसकी जानकारी कदापि नहीं होनी थी, अन्यथा, जैसे अर्तक्षत्र के राज्य के आरंभ में [एज्रा 4:7-16], वे उसके प्रयासों को विफल करने की चेष्टा करते।"[18]

नहेम्याह ने अपने द्वारा दीवार की परिक्रमा करके देखने को कुछ विस्तार से बताया। उसने सवारी के लिए एक पशु (संभवतः एक दृढ़ता से कदम रखने वाला गदहा), और **थोड़े पुरुषों को** (संभवतः कुछ विश्वसनीय मित्रों या उसके साथ यहूदा आए हुए कुछ राजा के सैनिकों) लिया, जो उसके साथ पैदल चले। घोड़ों का प्रयोग न करने के द्वारा उन्होंने देखे जाने और अशान्ति उत्पन्न करने की संभावना को कम किया।

आयत 13. ये लोग शहर के दक्षिण-पश्चिम की ओर **तराई के फाटक** से बाहर निकले। फाटक किस तराई की ओर ले जाता था? क्योंकि नहेम्याह के समय में यरूशलेम के आकार की और पश्चिमी दीवार की स्थिति अस्पष्ट है, इसलिए इसके विषय में निश्चित नहीं हुआ जा सकता है। जो यह मानते हैं कि यरूशलेम की चौड़ाई अधिक थी उनका सुझाव है कि यह मध्य तराई या हिनोम की तराई होगी।[19] किन्तु अन्य का मानना है कि नहेम्याह के समय में यरूशलेम पतला था और फाटक बाहर तायरोपीयन तराई की ओर ले जाता था।[20]

नहेम्याह और उसके साथियों ने **अजगर के सोते** या "गीदड़ के सोते" (NJPSV), जिसकी स्थिति अज्ञात है, की ओर यात्रा की। फिर वे शहर की दक्षिणी छोर पर स्थित **कूड़ाफाटक** को गए। "कूड़े" (אַשְׁפֹּת, *'एशपोथ*) के लिए इब्रानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है "राख का ढेर।" अन्य अनुवादों में "कचरा फाटक" (TEV), "मलबा फाटक" (NCV), "गोबर फाटक" (NIV) आया है। प्रतीत होता है कि यहूदी इस फाटक से बाहर निकलकर हिनोम की तराई में अपना कूड़ा-कर्कट फेंका करते थे। संभवतः यह यिर्मयाह 19:2 के "ठीकरे फेंकने का फाटक" का पर्याय है।

आयत 14. दल कूड़ाफाटक से आगे शहर के चारों ओर वामावर्त चलता गया। वे **सोते के फाटक** और **राजा के कुण्ड** को गए। ये "दाऊद के नगर" की दक्षिण-पूर्वी दीवार के साथ स्थित थे (3:15; 12:37)। "सोते के फाटक" से एनरोगल को प्रवेश मिलता होगा, जो किद्रोन और हिनोम तराइयों के संमिलन पर स्थित एक सोता था (देखें 2 शमूएल 17:17; 1 राजा. 1:9)। "राजा का कुण्ड" शिलोम कुण्ड के लिए हवाला हो सकता है जिसे हिजकिय्याह ने गिहोन सोते के जल के प्रवाह को मोड़ कर बनवाया था (2 राजा. 20:20; 2 इतिहास 32:30)। किन्तु यह भी संभव है कि यह उसके निकट किसी अन्य कुण्ड के लिए हो।

आयत 15. इस बिंदु पर आकर नहेम्याह को अपने पशु से उतरना पड़ा, संभवतः इसलिए क्योंकि विनाश के मलबे पर से होकर निकल पाना संभव नहीं था।[21] फिर वह **शहरपनाह** [נַחַל, *नकाल*] **को देखता हुआ चढ़ गया**। अन्य एड. इसे "तराई" (NIV), "नाले" (KJV), या "वादी" (NJPSV) अनुवाद करते हैं। प्रतीत होता है कि यह यरूशलेम के पूर्व में स्थित "किद्रोन की तराई" (CEV; NLT) को संबोधित करता है।

अन्ततः नहेम्याह **घूमकर तराई के फाटक** को लौट आया, जहाँ से यात्रा आरंभ हुई थी (2:13)। नहेम्याह द्वारा लिए गए मार्ग के विषय अनिश्चितता बनी हुई है। कुछ का मानना है कि जब वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसे सवारी से उतरना पड़ा, तो वह वापस मुड़कर तराई के फाटक को आ गया; अन्य कहते हैं कि वह पैदल ही चलता रहा जब तक कि उसने शहर का पूरा चक्कर नहीं लगा लिया। वर्णन का विवरण उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना उसका प्रभाव है। नहेम्याह ने "यरूशलेम की शहरपनाह" का भली-भांति निरीक्षण किया और उसका निष्कर्ष था कि वह वास्तव में टूटी हुई थी (2:13)। "उसके निरीक्षण ने हनानी की कही बात की पुष्टि की थी: यरूशलेम बहुत दुर्दशा के हाल में था [2:17; देखें 1:3]।"[22]

नहेम्याह द्वारा लोगों के समक्ष अपनी योजना रखना (2:16-18)

[16]हाकिम न जानते थे कि मैं कहाँ गया और क्या करता था; वरन् मैं ने तब तक न तो यहूदियों को कुछ बताया था और न याजकों और न रईसों और न हाकिमों और न दूसरे काम करनेवालों को। [17]तब मैं ने उनसे कहा, "तुम आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं, कि यरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं। आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह को बनाएँ, कि भविष्य में हमारी नामधराई न रहे।" [18]फिर मैं ने उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझ से क्या क्या बातें कही थीं। तब उन्होंने कहा, "आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें।" और उन्होंने इस भले काम को करने के लिये हियाव बाँध लिया।

आयतें 16, 17. यह स्पष्ट करने के पश्चात उसने अभी तक अपनी योजनाएं गुप्त रखी थीं, नहेम्याह ने कहा कि उसने सब लोगों को एकत्रित किया और अपने निरीक्षण के परिणाम उन्हें बताए। संभवतः, उसने शहरपनाह की स्थिति, जो उसने देखी, के विषय, कुछ विस्तृत (अलिखित) वर्णन दिया। शहरपनाह के टूटने से न केवल यहूदी शत्रुओं से होने वाले हमलों के लिए जोखिम में थे, परन्तु इससे उनकी **नामधराई** भी थी; परमेश्वर और उसके असुरक्षित लोग आस-पास के लोगों के लिए ठट्ठे का विषय थे। नहेम्याह ने लोगों को इन उभारने वाले शब्दों के द्वारा प्रोत्साहित किया: **"आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह को बनाएँ।"**

आयत 18. नहेम्याह ने फिर इस बात पर बल दिया कि इस कार्य में **राजा** की अनुमति और **परमेश्वर** की कृपादृष्टि थी! वे कैसे असफल हो सकते थे? वह उकसाता रहा, और लोग उसके प्रति ग्रहणशील थे। वे साथ मिलकर सहमत हुए **"आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें।"** लगता है कि काम तुरंत आरंभ कर दिया गया, क्योंकि नहेम्याह ने कहा, **उन्होंने इस भले काम को करने के लिये हियाव बाँध लिया।** इब्रानी लेख में "काम" नहीं आता है; इसे NASB के अनुवादकर्ताओं ने विचार को पूर्ण करने के लिए डाला है। इसके स्थान पर NRSV में "सब के लिए सामान्य भलाई," तथा REB में "भला उद्देश्य" आया है। लोगों ने उत्साहपूर्वक, शहरपनाह को बनाने की उसकी योजना में, नहेम्याह का साथ दिया, यरूशलेम और यहूदा की भलाई के लिए।

मार्क ए. ग्रोनटविट ने ध्यान किया है कि नहेम्याह के पहले दो अध्याय तुलना करते हैं "भले" (טוֹב, *टोब)* की "बुराई" (רַע, *रा')* के साथ। शब्द "दुर्दशा" (1:3), "उदास" (2:1-3), और "दुर्दशा" (2:17), शब्द *रा'* (या उसके समान शब्द) से आते हैं, जिसका शब्दार्थ होता है "बुराई।" दूसरी ओर, शब्द *टोब* के समान शब्द इन अभिव्यक्तियों "राजा प्रसन्न" (2:6), "मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि" (2:8), और "भले काम" (2:18) में मिलते हैं। इस संघर्ष का उत्कर्ष 2:10 में होता है: जब सम्बल्लत और तोबियाह ने सुना कि कोई इस्राएल का "कल्याण" *(टोब)* खोज रहा है तो यह उन्हें बहुत "बुरा" *(रा')* लगा। "इस प्रकार नहेम्याह के काम को भलाई और बुराई

में संघर्ष के रूप में दिखाने के लिए मंच तैयार हो गया।"[23] यहूदियों के लिए विकल्प "भले" और "बुरे" में से चुनना था। उन्होंने शहरपनाह को फिर से बनाने की नहेम्याह की योजना का भाग बनने का निर्णय करके "भले" को चुना।

विरोध का आरंभ (2:19, 20)

[19]यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था, और गेशेम नामक एक अरबी, हमें ठट्ठों में उड़ाने लगे; और हमें तुच्छ जानकर कहने लगे, "यह तुम क्या काम करते हो। क्या तुम राजा के विरुद्ध बलवा करोगे?" [20]तब मैं ने उनको उत्तर देकर उनसे कहा, "स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा, इसलिये हम उसके दास कमर बाँधकर बनाएँगे; परन्तु यरूशलेम में तुम्हारा न तो कोई भाग, न हक़, और न स्मारक है।"

पुस्तक की एक प्रमुख विषय-वस्तु अध्याय 2 के अन्त में प्रगट होती है: देश के लोगों ने यहूदियों को शहरपनाह बनाने से रोकने के प्रयास आरंभ कर दिए।

आयत 19. यहूदियों को अपने काम को पूरा करने से रोकने के पहले प्रयास में, **सम्बल्लत, तोबियाह,** और **गेशेम ...** यहूदियों के प्रयास को **ठट्ठों में उड़ाने लगे** (देखें 4:1-3), और उन्हें तुच्छ जानकर उनसे कहने लगे कि क्या वे यह विचार रखते थे कि शहर को पुनः सुरक्षित करने के द्वारा वे **राजा के विरुद्ध बलवा** करने में सक्षम हो जाएँगे। यद्यपि यह आरोप ठट्ठे में लगाया गया था और शत्रुओं की यहूदियों के प्रति दुर्भावना के कारण था, किन्तु इसमें एक गंभीर आरोप का संकेत था। यदि यहूदियों ने फारस के विरुद्ध बलवा करने का निर्णय लिया था, तो शहर को सुरक्षित करना इस दिशा में उनका पहला कदम होता। इसके अतिरिक्त, एक ऐसे ही आरोप के कारण अर्तक्षत्र ने यहूदियों को शहरपनाह का पुनः निर्माण करने से रोका था (एज्रा 4:12, 13, 19-23)।

आयत 20. नहेम्याह का उत्तर स्पष्ट और संयम के साथ था। पहला, उसने कहा कि सच्चा परमेश्वर, **स्वर्ग का परमेश्वर**, उनके लिए उनके काम में सफल होना संभव करेगा। दूसरा, उसने कहा कि इन शत्रुओं को यहूदियों द्वारा किए जा रहे काम में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं था। उनके पास **यरूशलेम में न तो कोई भाग, न हक़, और न स्मारक है**। नहेम्याह ने अपने विरोधियों के लिए यरूशलेम में कोई भी सामाजिक, न्यायिक, और धार्मिक अधिकार होने का इनकार कर दिया।[24] वह कहता प्रतीत होता है कि, "हम जो यहूदी हैं, उन्हें इस काम के लिए राजा की अनुमति है; तुम लोग यहूदियों का भाग नहीं हो। इसलिए, हम शहरपनाह को फिर से बना सकते हैं या नहीं इसके विषय तुम कुछ नहीं कह सकते हो।"

अनुप्रयोग

प्रभावी नेतृत्व: उत्साह (अध्याय 2)

एक अच्छा अगुवा उत्साही व्यक्ति होता है। योग्य अगुवे अपने उद्देश्यों के विषय में चिन्तित रहते हैं। यह कथन प्रत्येक क्षेत्र के अगुवों के लिए सत्य है। राजनेता अपनी पार्टी और उम्मीदवारों के प्रति उत्साही हो सकते हैं। व्यापार में समृद्ध अगुवे अपनी कम्पनी और अपने उत्पादों के प्रति उत्साही होते हैं। खेल-कूद में सफल अगुवे अपने खेल और अपने दल तथा जीतने के विषय उत्साही होते हैं![25]

नहेम्याह ने अपना उत्साह परमेश्वर की बातों के प्रति दिखाया, जब उसे अपने भाई हनानी से पता चला कि बचे हुए लोग बड़ी दुर्दशा में हैं और यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई है और उसके फाटक जले हुए हैं। उसकी प्रतिक्रिया त्वरित, तीव्र, और चिरस्थायी थी। उसने चार माह तक शोक और प्रार्थना की।

नहेम्याह इतना विचलित क्यों हुआ? संभवतः इससे पहले वह कभी यरूशलेम या यहूदा के विषय में व्यक्तिगत रीति से कभी लिप्त नहीं हुआ था। यहूदियों के बाबुल निर्वासित हुए लगभग 140 वर्ष हो गए थे। बहुत संभव है कि नहेम्याह का जन्म बंधुआई में ही हुआ था और उसने कभी यहूदा की यात्रा नहीं की थी। उसे यह अनुभूति हो सकती थी - अन्य अनेकों अप्रवासी संतानों, नाती-पोतों, और पड़पोतों के समान - कि पूर्वजों के देश से उनका संबंध कट चुका है। इसलिए, यह अपेक्षा की जा सकती है कि यहूदा के समाचार का उसके लिए कुछ विशेष महत्व नहीं रहा होगा। परन्तु इसके विपरीत वह उस परिस्थिति से बहुत विचलित हुआ।

पुनः, क्यों? एकमात्र संभव उत्तर है कि यहूदा कोई भी देश और यरूशलेम कोई भी शहर नहीं होगा। यहूदा परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के रहने के लिए चुना गया स्थान था - एक अभिप्राय से, वह "पवित्र देश" (जकर्याह 2:12) - और यरूशलेम, वह स्थान जहाँ परमेश्वर का मंदिर स्थित था, "पवित्र नगर" (11:1) था। नहेम्याह केवल अपने परिवार, अपने परिवार की संपत्ति, अपने पूर्वजों की कब्रों (जैसा उसने राजा से कहा), या अपने पुरखाओं के स्वदेश के विषय ही नहीं सोच रहा था। परन्तु, वह परमेश्वर के लोगों, परमेश्वर के मंदिर, और परमेश्वर के देश के लिए शोकित था, उनके लिए विलाप कर रहा था। प्रभु के प्रति उसके उत्तरदायित्व ने उसे प्रेरितों. किया कि यहूदियों की यरूशलेम की शहरपनाह के पुनः निर्माण में अगुवाई करे।

बाद में, नहेम्याह ने, लोगों के लिए व्यवस्था पढ़कर सुनाए जाने के द्वारा, दिखाया कि वह आत्मिक बातों के लिए गहराई से चिन्तित था, जिससे परमेश्वर और इस्राएल के मध्य की वाचा का पुनः नवीनीकरण हुआ। इसके अतिरिक्त, उसने परमेश्वर की वाचा के प्रति अपने प्रेम को दिखाया, व्यवस्था के पालन को दृढ़ता से लागू करने और जो उसका उल्लंघन करते उन्हें दण्डित करने के द्वारा।

परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति चिन्ता को उसके साथ साझा करने वाले बाइबल में उल्लेखित अगुवों में नहेम्याह न तो प्रथम था और न अंतिम। मूसा ने

"फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से" (इब्रा. 11:24-26) बढ़कर परमेश्वर से आशिषों को पाना चाहा, और वह इस्राएलियों के प्रति इतना उत्साही था कि उन्हें परमेश्वर द्वारा नाश किए जाने से बचाने के लिए उनके लिए मध्यस्थता की (निर्गमन 32:11-13)। फिनेहास परमेश्वर की व्यवस्था के प्रबल उल्लंघन और परमेश्वर के निवास-स्थान के भ्रष्ट किए जाने से इतना क्रोधित हुआ कि उसने इस्राएल की छावनी में व्यभिचार कर रहे एक पुरुष और स्त्री को मार डाल (गिनती 25:6-8)। यिर्मयाह बाबुल के लोगों द्वारा यरूशलेम के नाश से इतना दुखी हुआ कि उसने विलापगीत की पुस्तक लिखी। जब परमेश्वर ने इस्राएल के विनाश का दर्शन उसे दिखाया, तो आमोस चिल्ला उठा, मानो पीड़ा में हो, "हे परमेश्वर यहोवा, क्षमा कर!" (आमोस 7:2)। योना की पुस्तक यहूदियों को, उनके आस-पास के लोगों की आत्मिक भलाई में रुचि न रखने के लिए उन्हें डांटने के लिए लिखी गई। प्रेरितों. पौलुस ने परमेश्वर की इच्छा के प्रति अपने समर्पण को दिखाया, जब उसे ज्ञात हुआ कि यरूशलेम पहुँचने पर उसे बन्दी बना लिया जाएगा, तो उसने कहा,

> ... केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवा को पूरी करूं, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है (प्रेरितों 20:23, 24)।

इसके कुछ समय बाद, उसने फिर से कहा, "मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिये वरन मरने के लिये भी तैयार हूं" (प्रेरितों 21:13)।

निश्चय ही औरों की आत्माओं के लिए भक्त लोगों द्वारा दिखाई गई चिन्ता की तुलना कदापि परमेश्वर के उस प्रेम से नहीं की जा सकती है जिसके कारण उसने अपने पुत्र को मानवजाति को बचाने के लिए भेजा (यूहन्ना 3:16, 17)। यीशु पापियों के लिए मरा (रोमियों 5:6-9), चाहे जिन्होंने इस सन्देश को सुना उन में से अधिकांश ने उसका तिरस्कार किया। वह यरूशलेम के लिए, जहाँ उसे शीघ्र क्रूसित किया जाना था, रोया (मत्ती 23:37, 38)।

मसीही अगुवों में उसी प्रकार का आवेग होना चाहिए जैसा नहेम्याह ने प्रदर्शित किया। यदि यीशु ने अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर के राज्य को पहले रखने के लिए अनिवार्य जाना (मत्ती 6:33), तो आज जो उसके लोगों की अगुवाई करते हैं उन्हें उसके कार्य के प्रति अवश्य ही समर्पित होना चाहिए।

स्थानीय कलीसियाओं के लिए प्राचीन ही परमेश्वर द्वारा नामांकित अगुवे हैं, जिन्हें "पास्टर" भी कहा गया है, जिस शब्द का अर्थ "रखवाले" भी होता है (प्रेरितों 20:17, 28; इफि. 4:11)। प्राचीन परमेश्वर के झुण्ड के रखवाले है। इसलिए उन्हें ध्यान से प्रत्येक सदस्य की रखवाली करनी है, जैसे कि यीशु द्वारा वर्णित "अच्छा चरवाहा" अपनी भेड़ों की करता है (यूहन्ना 10:11, 14)। उन्हें यहेजकेल द्वारा

वर्णित बुरे चरवाहों (यहेज. 34:1-31) के समान नहीं होना है। परमेश्वर के झुण्ड के लिए प्राचीनों के प्रेम के कारण उन्हें उनपर "अधिकार जताने" से बचे रहना है (1 पतरस 5:1-4)। वैसे रखवाले होने के लिए जैसे कि परमेश्वर चाहता है कि वे हों, उन्हें वास्तव में परमेश्वर और उसकी कलीसिया की चिन्ता करनी चाहिए!

एक प्रश्न जो मसीही अगुवों को अपने आप से पूछना चाहिए वह है, "क्या मैं चिन्ता करता हूँ?" नहेम्याह वास्तव में परेशान हुआ जब उसने सुना कि "यरूशलेम की शहरपनाह ... टूटी पड़ी हुई है" (2:13)। क्या हम चिन्ता करते हैं यदि हमारे प्रभु की कलीसिया की "शहरपनाह टूटी हुई है" - यदि प्रभु की कलीसिया को संसार की दृष्टि में "दुर्दशा" का सामना करना पड़ रहा है (2:17)? क्या हम परेशान होते हैं जब कलीसिया बढ़ने के स्थान पर घट रही होती है। क्या यह हमें विचलित करता है जब सदस्य पृथक हो जाते हैं या उदासीन हो जाते हैं? क्या हम व्याकुल होते हैं जब भाई लोग गलत शिक्षाओं द्वारा बहकाए जाने के खतरे में होते हैं या समाज में किसी को भी मसीह के विषय शिक्षा नहीं दी जा रही है? क्या हम चिन्ता करते हैं?

कलीसिया की समस्याएं सुलझाने और कलीसिया की उन्नति की ओर पहला कदम यही है कि कोई चिंता करे या ध्यान रखे। परमेश्वर के कार्य के प्रति मन रखने से संख्याओं में या उपलब्ध रहने में कमी आ सकती है। परमेश्वर की जलन रखनेवाला एक योग्यता प्राप्त व्यक्ति प्रभु की कलीसिया को अधिक मज़बूत बना सकता है जितना दस बिना उसकी जलन रखनेवाले योग्यता प्राप्त व्यक्ति नहीं कर सकते।

उपसंहार। जो व्यक्ति सफलता से अगुवाई करना चाहता है, उसे उस कार्य के प्रति, जिसे उसने अपनाया है, गहराई और उत्साह के साथ चिन्ता रखनी चाहिए। कलीसिया में बिना भावनाओं के कार्य करने से भक्ति नहीं आएगी। अगुवा होने के लिए आवश्यक कार्यों को बिना झुण्ड से प्रेम रखे केवल औपचारिकता के साथ पूरा करने से कलीसिया प्रभु के प्रति समर्पित होने के लिए प्रोत्साहित नहीं होगी। अच्छे नेतृत्व का वांछित परिणाम है सदस्यों का मार्गदर्शन करना कि वे परमेश्वर और उसके कार्य के प्रति समर्पित हों।

यदि आप उदास होंगे तो क्या लोग इसका ध्यान करेंगे? (2:1, 2)

नहेम्याह 2:1, 2 में हम पढ़ते हैं,

> अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नामक महीने में, जब उसके सामने दाखमधु था, तब मैं ने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इस से पहले मैं उसके सामने कभी उदास न हुआ था। तब राजा ने मुझ से पूछा, "तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुँह क्यों उतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी।" तब मैं अत्यन्त डर गया।

"राजा का पियाऊ" (1:11) होने के कारण नहेम्याह को अपने काम में सभी नकारात्मक भावनाओं को छिपाए रखना होता था। उस दिन तक - जिस दिन

उसने यरूशलेम की शहरपनाह टूटने के द्वारा होने वाली अपनी उदासी को प्रदर्शित कर दिया, वह इस आवश्यकता के अनुसार चलता रहा था। इसके बाद के वार्तालाप में, फारस के राजा ने उसे यरूशलेम जाकर शहरपनाह के पुनः निर्माण की अनुमति दे दी।

प्रत्यक्षतः, नहेम्याह ने राजा की सेवा वर्षों तक की थी, बिना "उसके सामने कभी उदास" हुए (2:1)। ऐसा कितनी बार होता है कि लोग हमें उदास देखते हैं?

उदास होने (या दिखने) में कुछ गलत नहीं है यदि व्यक्ति के पास दुखी होने का कारण हो। हमें अपने मसीही भाइयों और बहनों के साथ अपने दुःख और परेशानियों को बाँटना चाहिए। गलतियों 6:2 कहता है, "तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।"

किन्तु यदि एक मसीही सदा ही उदास चेहरा दिखाता रहे, तो संभव है कि मसीह के सुसमाचार के विषय उसके समझ में कुछ गलत है। नए नियम का सन्देश है "प्रभु में सदा आनन्दित रहो" (फिलि. 4:4)। एक परमेश्वर की सन्तान जो सदा उदास रहती है उसने अपनी आशिषों को हाल ही में गिना नहीं है।

क्या लोग ध्यान करेंगे यदि किसी दिन आप अपने काम पर या फिर आराधना सभा में उदास चेहरे के साथ आएँ? क्या यह आपके सामान्य व्यवहार से भिन्न होगा? कुछ मसीही सदा ही ऐसे दिखते हैं मानो उन्होंने अभी अपने सबसे अच्छे मित्र को खो दिया है। वे उस छोटी वृद्ध महिला के समान हैं जिसके पास एक गीत गाने वालों की मण्डली गई। जब उससे पूछा गया कि वे लोग उसके लिए कौन सा गाना गाएं, तो उसने कहा, "कोई भी हो, मुझे परवाह नहीं, बस वह उदास होना चाहिए।"

हम ऐसे न हों। हम यह गाँठ बाँध लें कि हम आनन्दपूर्ण भाव ही दिखाएंगे। हमारे पास मुस्कुराने के लिए महान कारण है, परमेश्वर हम से प्रेम करता है!

सक्रिय होने के लिए पुकार (2:18)

नहेम्याह द्वारा यहूदियों को यह कहकर उकसाने के पश्चात कि "आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह को बनाएँ, कि भविष्य में हमारी नामधराई न रहे," उनकी प्रतिक्रिया थी "आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें।" फिर हम पढ़ते हैं कि "उन्होंने इस भले काम को करने के लिये हियाव बाँध लिया" (2:17, 18)।

कथन "आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें" "बनाने" पर एक अच्छे प्रचार सन्देश के लिए विषय प्रदान करता है। मैं 1960 के दशक में ओक्लोहोमा की एक कलीसिया में प्रचारक था। जिस भवन में भाई लोग एकत्रित होते थे उसे मूलतः सौ वर्ष से भी अधिक पहले बनाया गया था; मण्डली ने उसे खरीद लिया और हमारे वहाँ आने से लगभग पचास वर्ष पूर्व एक नए स्थान पर स्थानांतरित कर दिया। वह अच्छे हाल में नहीं था और मण्डली के लिए छोटा पड़ता था। जब मैंने प्रचारक का कार्य आरंभ किया, तो मुझे यह विश्वास दिलाया गया कि मण्डली शीघ्र ही एक नया भवन बनवाएगी। एक वर्ष बीत गया, फिर एक और वर्ष बीत गया, किन्तु नए भवन का निर्माण आरंभ नहीं हुआ। लगभग तीन वर्ष के पश्चात मैंने नए

भवन की आवश्यकता पर सन्देश दिया, और नहेम्याह 2:18 "आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें" को सन्देश का आधार बनाया। यह उस सन्देश का प्रभाव था या नहीं, परन्तु कलीसिया ने शीघ्र ही नए भवन के निर्माण को आरंभ करवा दिया; और हमारे वहाँ रहने के चार वर्ष से कुछ कम समय में वह पूरा भी हो गया।

निश्चय ही, कलीसिया के लिए भवन होना पवित्र-शास्त्र की माँग नहीं है; लेकिन भवन होना लाभकारी होता है। एकत्रित होने का स्थान परमेश्वर द्वारा मण्डली को दिए गए कार्यों: उसकी आराधना करना, उसके सदस्यों उन्नत करना, अच्छे कार्य करना, और सुसमाचार का प्रचार करना, को पूरा करने में सहायक होता है।

संभवतः इस लेख का और भी अच्छा उपयोग है सदस्यों द्वारा आत्मिक रीति से कलीसिया को उन्नत बनाना। "आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें" मसीह की देह को खोए हुओं को लौटा लाने और बचाए हुओं को और उन्नत करने के द्वारा! नहेम्याह और यहूदियों ने यरूशलेम की शहरपनाह के पुनः निर्माण के लिए जो कुछ किया वह सभी इस कार्य को करने पर भी लागू किया जा सकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]अर्तक्षत्र प्रथम ने लगभग 465 से 424 ई.पू. तक शासन किया। [2]देखें "द ज्यूविश कैलेंडर" कॉय डी. रॉपर, *एक्सोडस,* ट्रूथ फॉर टूडे कमेंट्री (सरसी, आरकैंसा: रेसॉर्स पब्लिकेशंस, 2008), 187. [3]इस विषय पर विस्तृत जानकारी के लिए, देखें डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 77-78, n. 1; एडविन एम. यामौची, "एज्रा-नहेम्याह," में *दि एक्सपोजीटर्स कमेंट्री,* वॉल्. 4, *1 राजा-अय्यूब,* संपादक फ्रैंक ई. गैब्लीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1988), 572. [4]हेरोडोटस *हिस्ट्रीज* 9.110. [5]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्. 16 (वाको, टेक्ससः वर्ड बुक्स, 1985), 178. देखें एस्तेर 2:18; 5:6. [6]नीतिवचन 16:14 कहता है, "राजा का क्रोध मृत्यु के दूत के समान है।" [7]यह तथ्य कि नहेम्याह ने कहा उसके पुरखाओं के कब्र यरूशलेम में है, यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि यहूदा में उसका परिवार (संभवतः उनका संपन्न परिवार था) यरूशलेम में रहता था, लेकिन यह इस तथ्य को नहीं प्रमाणित करता है कि वह राजकीय परिवार से संबंध रखता था। [8]1 मक्काबीज 13:52 (NRSV)। [9]जोसेफस *एंटीकीटीज* 18.4.3. [10]नहेम्याह की सुरक्षा सैन्य अनुरक्षक के द्वारा किया जा रहा था, जबकि लगभग चौदह वर्ष पूर्व एज्रा ने ऐसे अनुरक्षक लेने से इनकार कर दिया था (एज्रा 8:22)। दोनों की स्थिति पर चर्चा की जा सकती है, और दोनों ही अनुच्छेद एक लंबी दूरी, बाबूल या शूशन से यहूदा की यात्रा में बड़े खतरे को प्रतिबिंब करते हैं।

[11]कीथ एन. शोविल, *एज्रा - नहेम्याह,* द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री (जॉप्लीन, मिसूरीः कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 149. [12]एच. एल. जिंसबर्ग, अनुवाद, "पिटीशन फॉर औथोराइजेशन टू रिबिल्ड द टेम्पल आफ याहो," में *एंसियंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्सः रिलेटिंग टू दि ओल्ड टेस्टामेंट,* तीसरा एड., सम्पादक जेम्स बी. प्रिचार्ड (प्रिंस्टन, न्यू जर्सीः प्रिंस्टन यूनीवर्सिटी प्रेस, 1969), 492. यह चिट्ठी जो लगभग 407 ई.पू. में एलीफेंटाईन द्वीप (मिस्र और नूबिया के बीच) से यहूदा के अधिपति को मंदिर का पुनर्निर्माण की अधिकार देने के लिए लिखा गया था। [13]दो स्थान, जो एक दूसरे के समीप थे, इसी नाम से जाने जाते थेः "उत्तरी बेथ-होरोन" और "दक्षिणी बेथ-होरोन" (यहोशू 16:3, 5)। [14]जेकब एम. मेयर्स, *एज्रा, नहेम्याह,* दि एंकर बाइबल, वॉल्. 14 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्कः डबलडे & कम्पनी, 1965), 101. सम्बल्लत के पुत्रों का नाम "डलाइयाह" और "शेमाईयाह"

था। (जिंसबर्ग, 492.) [15]तोबियाह के पुत्र जेहोहानान का भी यहूदी नाम था। इसके साथ, तोबियाह के परिवार ने यरूशलेम में कुलीन यहूदी परिवार से परस्परविवाह किया था (6:17, 18; 13:4, 5)। [16]मेयर्स, 101. ऐतिहासिक एंव पूरातत्व सूचना के लिए, देखें तामारा सी. एस्कानाज़ी, "तोबियाह," में *एंकर बाइबल डिक्शनरी*, संपादक डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992), 6:584-85. [17]नोरा ए. विलियम्स, "गेशेम," में *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी*, 2:995. गेशेम का प्रभाव निचली (उत्तरी) मिस्र में सेप्टुजिंट (LXX) द्वारा प्रमाणित होता है। उत्पत्ति 45:10 में "गोशेन का देश" के बजाय इसमें "अरब का गेशेम देश" पाया जाता है। [18]एफ. चार्ल्स फेनशैम, *द बुक्स ऑफ एज़्रा एण्ड नहेम्याह*, द न्यू इंटरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 165. [19]शहर की बनावट और उसकी चर्चा को में *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया*, रिवाइज्ड एडिशन, एडिटर ज्योफ्रे डब्ल्यू. ब्रोमिले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 2:1018, 1020 में विलियम सैनफोर्ड लासोर, "यरूशलेम" में देखें। लासोर ने तर्क दिया कि तराई का फाटक हिनोम की तराई को लेजाता था। [20]शहर की बनावट और उसकी चर्चा के लिए राल्फ डब्ल्यू. क्लेइन, "द बुक्स ऑफ एज़्रा एण्ड नहेम्याह," *द न्यू इन्टरप्रेटर्स बाइबल*, एडिटर लीएनडर ई. केक (नैशविल्ले: एबिंगडन प्रैस, 1999), 3:759-60 में देखें।

[21]*ज़ॉनडरवैन इल्लस्ट्रेड बाइबल बैकग्राउंड्स कॉमेन्ट्री*, वोल. 3, *1 & 2 राजा, 1 & 2 इतिहास, एज़्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, एडिटर जौन एच. वॉल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन, 2009), 427 में एडविन एम. यामाउची, "एज़्रा एण्ड नहेम्याह।" [22]क्लेइन, 761. [23]मार्क ए. थ्रौटवेइट, *एज़्रा-नहेम्याह*, इंटरप्रटेशन (लुईविल्ले: जौन नौक्स प्रैस, 1992), 70. [24]राल्फ डब्ल्यू. क्लेइन, "नहेम्याह," में *हार्पर्स बाइबल कॉमेंट्री*, एडिटर जेम्स एल. मेएस (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर और रो, 1988), 381. [25]अफसोस कुछ अगुवे केवल एक ही बात के लिए उत्साही रहते हैं: अपने विषय में, अपने महत्व, यश, और सामर्थ्य। यद्यपि उन्हें उत्साह से भरे हुए कहा जा सकता है, और उनका उत्साह उन्हें कुछ सीमा तक सफल भी बनाता है, वे औरों को अपने उद्देश्य की सेवा स्वेच्छा से या स्थाई रीति से करते रहने के लिए प्रोत्साहित कर पाने में सफल नहीं हो पाते हैं। अन्ततः लोग (यदि शीघ्र नहीं तो) ऐसे अगुवे के प्रदर्शित स्वरूप के स्थान पर उनकी अपने स्वार्थ के प्रति चिन्ता को देख ही लेते हैं।